Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

पर्यावरण एवं राजनीतिक विश्लेषण: गांधीय प्रतिमान

Dr. Ashok Kumar Mahala*

Assistant Professor, Political Science, Govt. Arts College, Sikar

सारांश – *महात्मा गांधी के चिन्तन का क्षेत्र बहूत व्यापक एवं बहुआयामी है। गांधी मात्र विचारक, नेता तथा समाज सुधारक ही नहीं थे। अपितु राजनीति, चितंक एवं दर्शन को नया मोड़ देने वाले सक्रिय राजनीतिज्ञ, सन्त एवं विचारशील चिन्तक थे। गांधी के चिन्तन एवं कर्म का यद्यपि एक सन्दर्भ विशेष रहा है लेकिन वे केवल भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन एवं आधुनिक भारत की परिधि में ही आबद्ध नहीं किये जा सकते। वे निरन्तर मानवीय समस्याओं से जुड़े होने के कारण शाष्वत मूल्यों के उपासक रहे। समस्याएँ चाहे पश्चिमी दुनिया की हों अथवा तृतीय विश्व के नवोदित राष्ट्रों की, उनके समाधान में कहीं न कहीं प्रत्यक्षतः अथवा अप्रत्यक्षः गांधी की समबद्धता झलकने लगती है। गांधीजी के विचारों से पर्यावरण प्रदूषण व संरक्षण की चुनौती का सामना करने का एक बेहतरीन तरीका मिलता है जो व्यक्तिगत व वैश्विक दोनों ही स्तरों पर व्यवहारिक भी है। गांधीजी के मार्ग पर चलकर हम पर्यावरण संरक्षण के कई उपाय व्यक्तिगत व वैश्विक स्तर पर कर सकते हैं। चूंकि पर्यावरण राजनीतिक चिन्तन में एक नयी अवधारणा के रूप में उभरी है, वर्तमान में पर्यावरण राजनीति विज्ञान में एक बहुआयामी, अन्तर्विषयी, लोककल्याणकारी, मानवाधिकारों से जुड़ी संकल्पना बन गयी है।*

मुख्य शब्द - *पर्यावरणवादी, वैश्विक, जैविक-अजैविक घटक, पारितः आवृयते, ग्लोबल वार्मिंग, सतत विकास, आधुनिकीकरण, औद्योगिकीकरण, अर्न्तविषयी, लोककल्याणकारी, राजनीतिक विश्लेषण, वैश्वीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, पर्यावरणीय संरक्षण, पारिस्थितिकी।*

----------X----------

प्रस्तावना

पर्यावरण से तात्पर्य हमारे आस-पास के उस वातावरण से है जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है व जिसमें जीव निवास करते हैं। पर्यावरण सभी जैविक एवं अजैविक अवयवों का सम्मिश्रण है जो जीवों को चारो ओर से प्रभावित करता है। वायु, जल, भूमि वनस्पति, पेड़-पौधे, पशु व मानव सब मिलकर पर्यावरण बनाते हैं। प्रकृति में सबकी मात्रा और इनकी रचना इस प्रकार से व्यवस्थित है कि पृथ्वी पर एक सन्तुलनमय जीवन चलता रहे। विगत करोड़ों वर्षो से जब से मनुष्य पृथ्वी पर मनुष्य, पशु-पक्षी और अन्य जीव और जीवाणु उपभोक्ता बनकर आये तब से प्रकृति का यह चक्र निरन्तर व अबाध गति से चलता आ रहा है। जिनको जितनी आवश्यकता है, वह उन्हें मिलता रहता है और प्रकृति आगे के लिए अपने में और उत्पन्न करके संरक्षित कर लेती है।

वस्तुतः पर्यावरण जैविक एंव अजैविक घटकों का वह समूह है जो हमें चारों ओर से ढ़के हुए है तथा सभी जीवधारियों की क्रियाओं और व्यवहारों को प्रभावित करता है। पर्यावरण के अर्न्तगत सभी जैविक व अजैविक घटकों का समावेश हैं। वस्तुतः पर्यावरण के अर्न्तगत वह सब कुछ समाविष्ट है जो पृथ्वी पर अदृश्य एवं दृश्य रुप में विद्यमान है। पर्यावरण के कुछ कारक संसाधन के रुप में, जबकि दूसरे कारक नियत्रक के रुप में काम करते हैं। पर्यावरण के विभिन्न अवयव एक-दूसरे से जुडे हुए और परस्पर आश्रित रहते हैं। पर्यावरण प्राणियों के विकास एवं अस्तित्व के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है।

पर्यावरण शब्द का निर्माण परि+आवरण दो शब्दों के योग से बना है। परि का अर्थ है- चारों तरफ तथा आवरण शब्द का अर्थ है- ढ़का हुआ। इस प्रकार पर्यावरण शब्द का अर्थ है - चारों तरफ से ढकने वाला। शब्द विन्यास के आधार पर हिन्दी शब्द पर्यावरण शब्द संस्कृत के 'पारितः आवृयते' से बना है, जिसका अर्थ है कि जो हमें चारों तरफ से धारण किए हुए है या जो हमें चारों ओर से आवरित किए हुए है। इसके अर्न्तगत प्रकृतिजन्य सभी तत्व आकाश, जल, अग्नि, ऋतुएँ, नर्वत, नदियाँ, जीव-जन्तु, ग्रह-नक्षत्र, वनस्पति, दिशाएँ एक तरह से ब्रह्माण्ड ही समाहित हो जाता है।

www.ignited.in

गांधी ने राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक या पर्यावरणवादी विषयों में किसी सुनिश्चित दृष्टिकोण का प्रतिपादन नहीं किया। परन्तु पर्यावरण का राजनीतिक विश्लेषण का गांधीय प्रतिमान विस्तृत है। महात्मा गाँधी के चिन्तन का क्षेत्र बहुत व्यापक एवं बहुआयामी है। गाँधी मात्र विचारक, नेता तथा समाज सुधारक ही नहीं थे। अपितु राजनीतिक चिंतन एवं दर्शन को नया मोड़ देने वाले सक्रिय राजनीतिज्ञ, सन्त एवं विचारशील चिन्तक थे। वे भारतीयता के सांचे में ढ़ले सत्य, अहिंसा, प्रेम की प्रतिमूर्ति एवं सन्त थे। गांधी के चिन्तन एवं कर्म का यद्यपि एक सन्दर्भ विशेष रहा है लेकिन वे केवल भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन एवं आधुनिक भारत की परिधि में ही आबद्ध नहीं किये जा सकते। वे निरन्तर मानवीय समस्याओं से जुड़े होने के कारण शाश्वत मूल्यों के उपासक रहे। समस्याएं चाहे पश्चिमी दुनिया की हों अथवा तृतीय विश्व के नवोदित राष्ट्रों की, उनके समाधान में कहीं न कहीं प्रत्यक्षतः अथवा अप्रत्यक्षः गांधी की सम्बद्धता झलकने लगती है। एक नवीन मानव एवं एक नूतन समाज की संरचना की अवधारणा के सन्दर्भ में गांधी दर्शन का अनुशीलन आवश्यक है। महात्मा गांधी ने चिन्तन के प्रत्येक क्षेत्र में अपने विचार व्यक्त किये हैं।

सत्य, अहिंसा, प्रेम, सहयोग और सद्भावना गांधीवादी मार्ग दर्शन के मूल आधार हैं। मानवीय जीवन नाना प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ है। इसमें गांधीवाद मनुष्य को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व नैतिक समस्याओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बताते हुए अन्तःकरण की भावना से प्रेरित करता है। गांधी जी ने कहा कि, ईश्वर में सजीव श्रद्धा से लक्ष्य की प्राप्ति सरल हो जाती है। 'ईश्वर में सजीव श्रद्धा होने का अर्थ है मानव-जाति का भ्रातृत्व स्वीकार करना। इसका अर्थ सब धर्मों के लिए समान आदर भाव भी है।''[4][2]

अध्ययन के उद्देश्य-

1. अध्ययन का उद्देश्य पर्यावरणीय वैश्विक संदर्भ में विकास के परम्परागत प्रतिमानों की असफलता के कारणों व दुष्परिणामों को जानना है।

2. सतत् विकास के पथ पर चलने से किस प्रकार वैश्विक समस्याओं जैसे ग्लोबल वार्मिंग व अधिक उत्पादन आदि का समुचित समाधान किया जा सकता है, को जानना ही इस शोध पत्र का उद्देश्य रहा है।

3. गांधीवादी विकल्प के माध्यम से वर्तमान समस्या को सुलझाना।

4. पर्यावरण, प्रदूषण जनित समस्या में संदर्भ में गाँधीवादी विकल्प का अध्ययन करना।

5. गांवों, शहरों व नगरीकरण के विकास की समस्या के विकल्प का अध्ययन करना।

परिकल्पना -

परिकल्पना के रूप में जिन अनुत्तरित प्रश्नों एवं विचारों को व्याख्या प्रदान किया जाना निर्धारित किया गया है, उसकी व्याख्या की जा सकती है।

1. पर्यावरण प्रदूषण वर्तमान समय की एक गंभीर समस्या है। पर्यावरण संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयास नाकाफी है। किस तरह पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत व वैश्विक दोनों ही स्तरो पर प्रयासों की आवश्यकता है।

2. अति औद्यागीकरण का क्या विकल्प हो सकता है।

3. पर्यावरण संरक्षण के लिए किये गये प्रयास व्यक्तिगत व वैश्विक स्तर पर कैसे नाकाफी साबित हो रहे हैं।

4. गांधीजी के विचारों से हमें पर्यावरण प्रदूषण व संरक्षण की चुनौती का सामना करने का एक बेहतरीन तरीका मिलता है जो व्यक्तिगत व वैश्विक दोनों ही स्तरों पर व्यवहारिक भी है।

शोध प्रविधि-

प्रस्तुत शोध पत्र मूलतः द्वितीयक सूचना स्रोतों पर आधारित है। प्रस्तुत अध्ययन की वस्तुनिष्ठता बनाए रखने के लिए शासकीय और अशासकीय संस्थाओं के द्वारा प्रकाशित/अप्रकाशित दस्तावेज, सांख्यिकी, आदेश, सूचना आदि का उपयोग किया गया है।

'पर्यावरण' राजनीतिक चिन्तन में एक नयी अवधारणा के रूप में उभरी है, क्योंकि परम्परागत राजनीतिक चिन्तन एवं विश्लेषण का केन्द्र बिन्दु 'राज्य' एवं 'सरकार' तक ही केन्द्रित रहा। आधुनिक राजनीति विज्ञान जो कि 'व्यवहारवादी राजनीति विज्ञान' के रूप में जाना जाता है, का मुख्य लक्ष्य राजनीति विज्ञान को अन्तर्विषयी, वैज्ञानिक, यथार्थ परक बनाना रहा तथा राजनीतिक विश्लेषण को राजनीतिक प्रक्रियाओं, राजनीतिक व्यवहार पर केन्द्रित

करना था। उत्तर व्यवहारवादी युग के आते-आते राजनीति विज्ञान के अध्ययन का केन्द्र 'कर्म एवं प्रासंगिकता' बना जिसका सम्बन्ध सामाजिक सरोकारों से हैं। अतः पर्यावरण राजनीतिक विश्लेषण में एक नये सामाजिक सरोकार के नवीन मुद्दे के रूप में 1970 के दशक के बाद से अध्ययन में जुड. गया है।

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका के राज्यों का उद्भव एवं विकास हुआ। राजनीतिक चिन्तन में विकासशील राष्ट्रों का विकास, आधुनिकीकरण, औद्योगिकीकरण की समस्याऐं अध्ययन का विषय बनी। 1970 के दशक के आते-आते औद्योगिकीकरण की होड. के परिणामस्वरूप भौतिक एवं जैवीकीय पर्यावरण क्षरण, पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरण संरक्षण की समस्याएं उभरने लगी। परिणामस्वरूप पर्यावरण एक अन्तर्विषयी एवं बहुमुखी समस्या के रूप में उभर कर आने लगा जिसने राजनीतिक क्षेत्र में स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर चिन्तन, मनन एवं कर्म की दिशा प्रशस्त की और राजनीतिक विज्ञान में 'पर्यावरण' के अध्ययन के लिए कई आयाम विविध स्तरों पर प्रदान किए एवं राजनीति विज्ञान के अध्ययन को व्यापक एवं समाजोपयोगी बनाने की दिशा प्रशस्त की है।

वर्तमान में पर्यावरण राजनीति विज्ञान में एक बहुआयामी, अन्तर्विषयी, लोककल्याणकारी, मानवाधिकारों से जुड़ी संकल्पना बन गयी है। राजनीतिक चिन्तन में ऐतिहासिक दृष्टि से देखे तो प्राचीन ग्रीक विचारकों ने प्राकृतिक तत्वों की प्रभुता को स्वीकार किया। जिसमें हिप्पोक्रेट्स, सिनिक्स, अरस्तु, प्लेटो, मांटेस्क्यू, रूसो, जे. एस. मिल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। हिप्पोक्रेट्स ने ईसा से 420 वर्ष पूर्व वायु, जल और स्थान विशेष की महत्ता को स्वीकार करते हुए एशिया निवासियों को उपयुक्त वातावरण में आराम पसन्द जीवन यापन करने वाला तथा यूरोपियों की अपेक्षाकृत अनुपयुक्त वातावरण में परिश्रमी जीवन व्यतीत करने वाला बताया।[5] सिनिक्स का प्रमुख विचार प्राकृतिक जीवन की ओर लौटने का था। वे 'सादा जीवन' एवं 'पवित्र विचार' के पक्षधर थे। बनावट और कृत्रिमता का विरोध करते हुए वे कहा करते थे कि, मनुष्य पशुओं जैसा स्वाभाविक एवं अकृत्रिम जीवन जितना बिता सके उतना ही अच्छा हैं। 'प्रकृति की ओर लौटो' यह उनका नारा था।[6]

इसी प्रकार 'प्लेटो' भी अपने आदर्श राज्य की काल्पनिक भौगोलिक रूपरेखा खींचता है। जिसका सम्बन्ध पर्यावरण से है। इनका मत है कि राज्य सागर-तट से पर्याप्त दूर रहना चाहिए, राज्य चारों ओर से सुरक्षित सीमाओं से घिरा हुआ हो ताकि, अन्य राज्य उस पर सुगमतापूर्वक आक्रमण न कर सकें। इसके ठीक विपरीत 'अरस्तु' की मान्यता है कि भूमि समुद्र के समीप होनी चाहिए ताकि आवश्यक सामग्री का आयात हो सके।[7] स्ट्रेबो ने रोम साम्राज्य की सम्पन्नता का कारण इटली की जलवायु को व्यक्त किया। बोदां ने ठण्डे देशों के निवासियों को निर्दयी और साहसी व्यक्त किया, जबकि गर्म देशों के निवासियों को प्रतिशोधी, कुटिल किन्तु सच और झूठ में अन्तर करने वाला बतलाया।

मांटेस्क्यू ने जलवायु एवं मृदा को मानव के चरित्र का निर्माता बताया। उसके अनुसार ठण्डी जलवायु के निवासी शारीरिक दृष्टि से पुष्ट, साहसी तथा कमकुटिल होते हैं, जबकि गर्म जलवायु के निवासी धर्म प्रिय तथा परम्परा और संस्कृति में अधिक विश्वास रखते हैं।[8] रूसो का मत है कि जिस प्रकार प्रकृति ने मनुष्य का एक आकार निश्चित कर दिया है, और उससे बहुत बड़ा अथवा बहुत छोटा मनुष्य शोभा नहीं देता, उसी प्रकार शासन की सुविधा के लिए यह आवश्यक है कि राज्य अधिक फैले हुए न हों तथा भूमि की बनावट और भौगोलिक दशाओं का भी राजनीतिक संगठन पर बहुत प्रभाव पड़ता है।[9]

प्रकृति अथवा पर्यावरण के प्रभुत्व को कालान्तर में भी विद्वान स्वीकार करते रहे हैं। जर्मन विचारक हम्बोल्ट एवं कार्ल रिटर पर्यावरणवाद् के पोशक थे। प्रसिद्ध वैज्ञानिक चाल्स ने 'जीवों के विकास का सिद्धान्त' प्रतिपादित किया। हैकल ने पारिस्थितिकी सम्बन्धी विचार प्रस्तुत किए जो मानव-पर्यावरण सम्बन्धों के सम्बन्ध में आधारभूत माने जाते हैं। रेटजल के अनुसार मानव अपना मस्तिष्क आकाश में चाहे जितना उंचा क्यों न उठा ले तथापि उसके पैर सदा धरती पर ही टिके रहेंगे तथा उसकी धूल प्रकृति में विलीन हो जाएगी।[10] इसी प्रकार से हम राज्यों के तत्वों को देखें, जिसमें चार तत्व बहुत आवश्यक हैं, जिनसे मिलकर ही राज्य का निर्माण होता है जिसमें जनसंख्या के बिना राजनीतिक सगंठन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।[11]

साथ ही जनसंख्या एवं राज्य के भू-भाग के मध्य विविध विद्वानों ने घनिष्ठ अन्तर-सम्बन्ध माना है। भूमि की बनावट और भौगोलिक दशाओं का भी राजनीतिक सगंठन पर बहुत प्रभाव पड.ता है। यदि राजनीतिक सिद्धान्त में अराजकतावादी विचारधारा का विश्लेषण किया जाए तो यह वह विचारधारा है जो कि व्यक्ति को प्रकृति के अधिक नजदीक रखने की समर्थक है एवं राज्य नामक संस्था को व्यक्ति को व्यक्ति के लिए पूर्णतः अनावश्यक मानती है एवं विकेन्द्रिकृत व्यवस्था की समर्थक है और इसकी यह दृष्टि

अराजकतावादी चिन्तन को पर्यावरणवादियों के नजदीक ला देती है।

परम्परागत राजनीतिक चिन्तन में यद्यपि पर्यावरण राजनीतिक चिन्तन का मुद्दा नहीं रहा, आधुनिक रजनीतिक सिद्धान्त में पर्यावरण का अध्ययन और विश्लेषण 20वीं शताब्दी में 1960 के दशक में प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में पर्यावरण से जुडे. कई मुद्दे राजनीति विज्ञान के अध्ययन में उभर कर आ रहे हैं। जिसमें पर्यावरण और विकास, पर्यावरण और मानवाधिकार, पर्यावरण और नैतिकता, पर्यावरण एवं न्याय, पर्यावरण व मानव आदि मुद्दे प्रमुख हैं। इसी प्रकार से सुरक्षा के नऐ आयाम जैसे- हरित सुरक्षा, हरित राजनीति, हरित दल की बात की जा रही है। ये ऐसे सभी मुद्दे राजनीतिक विश्लेषण को अध्ययन की दृष्टि से भविष्योन्मुखी एवं अन्तर्विषयी बनाते हैं एवं राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर शक्ति की राजनीति से सहयोग की राजनीति के लिए राज्यों को प्रेरित भी कर रहे हैं।[12]

पर्यावरणवाद कोई स्वाधीन राजनीतिक-सिद्धान्त नहीं है। यह एक विचारधारात्मक आन्दोलन है, जो पश्चिम राजनीति में 1970 से शुरू होने वाले दशक में उभरकर सामने आया और धीरे-धीरे पूरे विश्व में फैल गया। वर्तमान समय में कई साम्यवादी, समाजवादी विचारक वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण को 'पर्यावरणीय संरक्षण' के लिए हानिकारक मानते हैं क्योंकि इनसे औद्योगिकीकरण, उपभोक्ता जैसी प्रवृत्तियों को बढावा मिला है जो कि पर्यावरण के लिए हानिकारक हैं।[13]

राजनीतिक सिद्धान्त में पर्यावरण एक नयी परन्तु व्यापक अवधारणा है एवं विश्वव्यापी समस्या भी जो कि मानवीय गतिविधियों का परिणाम है जिसका सम्बन्ध भौतिक एवं जैविकीय पर्यावरण से है। इस नई समस्या ने विश्व के सभी राष्ट्रों को विकास के प्रति नई नीति "टिकाउ विकास" की ओर सोचने के लिए प्रेरित किया जिसका आशय ऐसे विकास से है जो कि वर्तमान समाज की आवश्यकताओं को क्षति पहुँचाए बिना पूर्ण करे।

गांधी ने राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक या पर्यावरणवादी विषयों में किसी सुनिश्चित दृष्टिकोण का प्रतिपादन नहीं किया। पर्यावरण समस्या को गांधीय दृष्टिकोण से समझने पर यह कहा जा सकता है कि इनके मूल में मनुष्य की हिंसा की प्रवृत्ति है, जो कई रूप में हमारे सामने आयी है। जैसे आयुध उद्योग में विशाल वृद्धि, जातीय और धार्मिक असहिष्णुता, सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष, मानव अधिकारों का दुरूपयोग आदि है। गांधी के मत में "जनता की अधिकांश गरीबी का कारण यह है कि आर्थिक और औद्योगिक जीवन में हमने स्वदेशी के नियम को भंग किया है अगर भारत में व्यापार की कोई वस्तु विदेशों से नहीं लाई गयी होती तो हमारे देश में दूध और शहद की नदियां बहती। भारत अपने जीवन का उत्तम निर्वाह तभी कर सकता है जब वह अपनी आवश्यकताओं की सारी वस्तुएं अपनी ही सीमा में उत्पन्न करने लगे। उसे नाशकारी प्रतिस्पर्धा के उस चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए जो आपसी लड़ाई-झगड़ों, ईष्र्या और अन्य अनेक बुराइयों को जन्म देता है।

गाँधी और पर्यावरण:

1. व्यक्ति के सन्दर्भ में-

महात्मा गांधी ने पर्यावरण संरक्षण शब्द का तो इस्तेमाल कभी नहीं किया परन्तु जो कार्य किए व कहा उनमें पर्यावरण संरक्षण निहित था तथा उन बातों का अनुसरण कोई भी व्यक्ति करने में सक्षम है और यदि सभी उनका अनुसरण करें तो पर्यावरण स्वयं ही संरक्षित हो जाएगा। वे प्रकृति के बहुत करीब थे और वे यह मानते थे कि प्रकृति ईष्वर ही का रूप है व व्यक्ति पर्यावरण से है। उसे अपने पर्यावरण व प्रकृति का सम्मान करना चाहिए तथा उनसे उतना ही लेना चाहिए जितना आवश्यक है। गांधी ने प्रकृति को ईष्वर से जोड़ने का प्रयास किया, क्योंकि अनन्त स्वरूप में प्रकृति का होना ईष्वर की मौजूदगी का अहसास है।

2. प्रकृति का सीमित उपभोग-

प्रकृति में सब कुछ सीमित है, इसलिए हमें भी अपनी आवश्यकताओं को असीमित रखने का कोई अधिकार नहीं हैं। गांधी जी ने कहा था कि- "प्रकृति के पास मानव की आवश्यकताओं को पूरा करने लिए पर्याप्त साधन हैं लेकिन उसके असीमित भोग के लिए नहीं।" मनुष्य को मूलतः एक नैतिक प्राणी मानने के ही कारण गांधी जी उपभोग में भी उस से नैतिक मूल्यों के निर्वहन की अपेक्षा करते थे। वह कहते थे कि, शोषित श्रम द्वारा तैयार की गयी वस्तुओं को खरीदना और उनका इस्तेमाल करना पाप युक्त है अतः वह उपभोक्ता को भी सत्याग्रही बनने का आमन्त्रण देते थे।

3. प्रकृति प्रेम -

महात्मा गांधी पशु-पक्षी, वृक्ष, पहाड़, नदी इत्यादि सभी से प्रेम करने के लिए बल देते थे क्यांेकि उनके अनुसार धरती के संसाधनों को समूची मानवता के लिए भगवान का उपहार समझकर मौजूदा व आने वाली पीढ़ियों को ध्यान में रखकर

ही इस्तेमाल किया जाना चाहिए। वे मानते थे कि जब तक जीवन चक्र नहीं टूटता है, तब तक मिट्टी सोना उगलती रहती है और भूमि पर निर्भर रहने वाले लोगों को बेहतर स्वास्थ्य, जीविका और शान्ति मिलती रहती है। मानव व प्रकृति के बीच संबंधों को लेकर गांधी के विचार, "वसुधेव कुटुम्बकम्" की वैदिक अवधारणा से प्रेरित है जिसमें पृथ्वी को जीवों का बहुत बड़ा परिवार माना गया है। औद्योगिक विकास के कारण पृथ्वी के जीवन पर सिर्फ दबाव ही नही पड़ रहा है, यह खतरें में भी पड़ गया हैं। जीवन उपयोगी प्रणालियों में परिवर्तन से अन्ततः मानव जीवन की गुणवत्ता सहित विभिन्न जीवों के जीवन क्षमता प्रभावित होती है।[14]

गांधीजी के ये विचार अधिक प्रासंगिक हैं, क्योंकि पृथ्वी का तापमान निरन्तर बढ़ रहा है। इसके दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं और भविष्य खतरे में है। ऐसे में प्रकृति के प्रति अधिक संवेदनशील रवैया अपनाने की आवश्यकता है। यदि हम प्रकृति को बचाएंगे तो वह हमारी रक्षा करेगी। यदि हम उसके प्रति लापरवाह होंगे तो मानव जीवन ही संकट में पड़ जाएगा।[15]

4. प्रकृति का सीमित दोहन-

भारत की आत्मा का प्रतीक गांधीवादी दर्शन ही था लेकिन हमने पश्चिम की नकल की ओर इस प्रकिया में अपनी आत्मा को भी खो दिया। गांधीजी के सन्देश का तकाजा यही है कि व्यक्ति के जीवन और समाज की संरचना को फिर से नैतिक उंचाई की ओर से जाना जाए। वास्तव में गांधीजी एक सामाजिक चेतना युक्त मानव की रचना करना चाहते थे। उनका लक्ष्य एक सामाजिक मानव का निर्माण करना था। सामाजिक मानव से गांधीजी का तात्पर्य एक ऐसे मानव से है जो समाज की समस्याओं के प्रति सजग हो और उन्हें हल करने में स्वैच्छिक तौर से अपनी भूमिका निभाता रहे।

गांधीजी हर हाथ के लिए काम और हर पेट के लिए भोजन चाहते थे। उनके आदर्श समाज की परिकल्पना थी ऐसा सक्रिय और सामाजिक सरोकार वाला समाज, जिसमें सब की सहभागिता हो। इन तत्वों की उपेक्षा ने आज की विकसित विचारधारा को विराट शून्य में उंची उड़ानें बना दिया है, उसमें अर्थ और उद्देश्य संजोने के लिए गांधीजी के विचार अत्यन्त प्रासंगिक हैं।

5. सादा जीवन-

गांधीजी चाहते है कि हर मनुष्य को सन्तुलित एवं पोशक भोजन, शरीर की रक्षा के लिए पर्याप्त कपड़े, रहने के लिए स्वच्छ, स्वास्थ्यप्रद और हवादार मकान अवश्य मिले। सादगी का अर्थ आलस्य, दरिद्रता और भोंडापन नहीं। गांधीजी की सादगी का वैचारिक आधार अहिंसा और रोजी के लिए किये गये शरीर श्रम की प्रतिष्ठा है। रोजी के लिए किये जाने वाले शरीर श्रम को गांधीजी एक प्रकार से भगवान की भक्ति मानते हैं। मनोविकास के लिए हाथों से काम करना बड़ा जरूरी हैं। गांधी के इस सिद्धान्त में आधुनिक जीवन की समस्याओं का समाधान निहित है।

6. चरखा, विकेन्द्रीकरण, खादी व ग्राम उद्योग-

गांधी जी इन पर बल देते थे क्योंकि वे मानते थे कि व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं या निकटवर्ती स्थान अर्थात् अपने ग्राम में ही करनी चाहिए। खादी केवल एक वस्त्र ही नहीं है, वरन् यह सम्पूर्ण देश के लिए स्वतंत्रता व समानता का साधन है। इसके अलावा खादी मानसिकता का अर्थ है उत्पादन का विकेन्द्रीकरण तथा जीवन की आवश्यक वस्तुओं का समान वितरण। अतः उन्होंने कहा कि प्रत्येक ग्राम अपनी आवश्यकता की वस्तुओं का उत्पादन करे तथा एक निश्चित भाग नगरों के लिए उत्पादन किया जाए। प्रत्येक परिवार के पास भूमि का एक निश्चित भाग हो, जिसमें वह अपने परिवार की आवश्यकता के अनुरूप कपास का उत्पादन करे, यह कठिन भी नहीं है, क्योंकि यह बहुत सरल प्रक्रिया है। चरखा व्यावसायिक शांति का प्रतीक है, व्यावसायिक युद्ध का नहीं। यदि हम केवल इस एक उद्योग को पुनः जीवित कर सकें, तो अन्य उद्योग स्वयं ही पुनःजीवित हो जाएंगे।

7. अहिंसा-

आज हम यह जानते हैं कि संपूर्ण जीवन चक्र में एक प्रजाति दूसरे पर निर्भर है तथा किसी एक स्तर के विलुप्त होने का अर्थ दूसरे स्तर का ह्रास भी है। अतः हमें जीवन चक्र के हर स्तर की रक्षा करनी है जो हिंसा से नहीं मात्र अहिंसा से ही हो सकता है। अतः कहा जा सकता है कि गांधीजी के समय शाकाहार अपने में मनुष्य व प्ररकृति दोनों का कल्याण निहित है। गांधीजी की दृढ़ मान्यता यह है कि अहिंसा की जीवन यात्रा मानव-जीवन के पृथ्वी पर उदय के साथ ही प्रारम्भ हुई है।

8. स्वच्छ पर्यावरण-स्वास्थ्य और सफाई-

गांधीजी स्वच्छ पर्यावरण हेतु साफ-सफाई के कट्टर समर्थक थे। वे कहते थे कि रहन-सहन तरीके और आदतें, खान-पान आदि को विकृति से बचाना है। सफाई का एक और पहलू महत्त्वपूर्ण है, उन्होंने बताया कि सफाई का मतलब केवल अपने आसपास या घर का कूड़ा-करकट निकालकर बाहर डाल

www.ignited.in

देना नहीं है। जिसे हम कूड़ा-करकट समझते है उसे साधारण सी प्रक्रिया के जरिये, उत्तम खाद में परिवर्तित किया जा सकता है। इससे रासायनिक खाद और कीटनाषकों जैसी हानिकारक चीजों के उपयोग से भी बचा जा सकेगा। वास्तव में, स्वास्थ्य और सफाई को एक स्वतंत्र विषय के रूप में शिक्षा में दाखिल करना चाहिए तथा सफाई की आदतों के बारे में व्यापक प्रचार होना चाहिए।

उपलब्ध साहित्य की समीक्षा-

एम.सी. बेहड़ा, मेकिंग गांधी रिलेवेन्ट, कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स प्राईवेट लि0 नई दिल्ली (2009) इस पुस्तक में विकास की संकल्पना को आर्थिक, समाजिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक आदि आयामों से जोड़कर विकास के गांधीय प्रतिमान के समतुल्य कर दिया गया है। उदारवादी व साम्यवादी मॉडल की अपर्याप्तता, पतन, दुष्प्रभावों और परिवर्तन की आवश्यकता को स्पष्ट करते हुए गांधीय विकास मॉडल या सतत् विकास के गांधीय प्रतिमानों को मानवीय सभ्यता हेतु उपयोगी बताया है।

डॉ. उपेन्द्र प्रसाद, गांधीवादी समाजवाद, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली (2001) इस पुस्तक में गांधीवाद के मौलिक सिधान्तो- न्यासिता, सर्वोदय, स्वदेशी, सत्याग्रह आदि का वर्णन, सामाजिक न्याय के विचार की मीमांसा और क्रांति के वर्गविहीन समाज पर रोशनी डाली गई है। भारत की वर्तमान परिस्थितियों में गांधीवादी दर्शन और समाजवादी चिन्तन को वर्णित किया गया है। विकास की सर्वोदय से सम्बन्धित करके सभी पक्षों-नैतिक, समाजिक, आर्थिक आदि को व्याख्या की गई है।

डॉ. जी.पी. नेमा व प्रतापसिंह, गांधीजी का दर्शन, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर (2003) इस पुस्तक में महात्मा गांधी के आर्थिक समाजिक व राजनीतिक दर्शन की विशद विवेचना के साथ-साथ वर्तमान भौतिकतावादी युग, विकास की समावेशी धारणा में छोटे उद्योगों पर बल देना, ग्रामोद्योग, हरित विकास, आत्मनिर्भरता आदि तत्वों पर प्रकाश डाला गया है।

नन्दकिशोर आचार्य, सम्भ्यता का विकल्प (गांधी दृष्टि का पुनराविष्कार), वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर (1955) इस पुस्तक में लेखक ने स्पष्ट किया गया है कि किस तरह गांधीमार्ग का अनुसरण वर्तमान विश्व की आपाधापी को समाप्त कर सकता है और मनुष्य का सर्वतोन्मुखी विकास कर सकता है।

प्रो. पूर्णमल (2002) प्रथम संस्करण - दलित संघर्ष और सामाजिक न्याय - विषय पर अपना शोध ग्रन्थ लिखा है जिसमें सामाजिक न्याय की ऐतिहासिक व्याख्या एवं संविधान में वर्णित सामाजिक न्याय के प्रमुख प्रावधानों का विष्लेषण, मनुस्मृति महातमा गाँधी एवं डॉ. अम्बेडकर के विचारों का संकलन दलितोत्थान के सम्बन्ध में राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक, सरकारी एवं गैर सरकारी प्रयासों का उल्लेख है।

भवानीदत पंडया, समुचित तकनीक बेहतर भी, कारगर भी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली (1977) इस पुस्तक में चार भागों में आज की दुनिया, संसाधन, तीसरी दुनिया और संगठन तथा स्वामित्व की चर्चा की गई हैं। इसमें अलगाववाद व संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से पर्यावरण ह्रास बताया गया है। अपनी वैज्ञानिक व तकनीकी शक्ति मुखरित होने के उत्साह में आधुनिक मानव ने उत्पादन की ऐसी प्रणाली का निर्माण कर लिया है जो प्रकृति के साथ अनाचार करती है और ऐसे समाज की रचना करती है जो मनुष्य को विकृत करती

निष्कर्ष-

इस प्रकार गांधीजी के पर्यावरण के संबंध में प्रकृति का सम्मान, प्रकृति का सीमित उपभोग, प्रकृति प्रेम, प्रकृति का सीमित दोहन, सादा जीवन, चरखा, विकेन्द्रीकरण, खादी व ग्राम उद्योग, शाकाहार, अहिंसा, स्वच्छ पर्यावरण, स्वास्थ्य और सफाई, कमजोर के प्रति संवेदना, मेरा जीवन ही मेरा संदेश आदि के विचारों पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट होता है कि गाँधीजी के मार्ग पर चलकर हम पर्यावरण संरक्षण के कई उपाय व्यक्तिगत व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कर सकते हंै व पर्यावरण का संरक्षण सफलतापूर्वक कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची -

1. शर्मा, जे.पी., एन.के. शर्मा, तथा श्रीकान्त दुबे, पर्यावरणीय अध्ययन, लक्ष्मी पब्लिकेंशन्स, नई दिल्ली, 2009 पृ. 2,3
2. सिंह, मंजू, पर्यावरण अध्ययन, डिस्कवरी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2006, पृ. 1
3. जैन, रमेश, पर्यावरण मीडिया एवं कानून, सबलाइम पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2005 पृ. 1
4. एम के गांधी: "हरिजन" 14 मई, 1938
5. सक्सेना, हरिमोहन, पर्यावरण एवं प्रदूषण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1995 पृ.स. 20

6. शर्मा, प्रभुदत्त, पाश्चात्य राजनीतिक विचारों का इतिहास, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, 2003, पृ. स.84

7. उपरोक्त -पृ. स. 84,132-133

8. सक्सेना, हरिमोहन, पूर्वोक्त - पृ.सं. - 20-21

9. तायल, बी.बी.,राजनीतिक विज्ञान और भारतीय शासन, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली,पृ. सं. 45-47

10. सक्सेना, हरिमोहन, पर्यावरण एवं प्रदूषण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1995 पृ.स. 20-21

11. हेन्स, जे., मार्गेन्थाउ, पोलिटिक्स अमंग नेशन्स, कलकत्ता, 1963, पृ. सं. 12212.

12. नील कार्टर, पालिटिक्स एज इफ नेयर मैटर्रड में वॉट इस पॉलिटिक्स? संपादक - एडरियन लैफटविच, प्रकाशक पॉलिटी,पृ. सं. 182-193

13. गाबा, ओम प्रकाश, रालनीतिक विचार विश्वकोष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2002, पृ. सं. 89-90

14. सिन्हा, मनोज, गांधी अध्ययन, ऑरियंट लॉग्मैन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2008, पृ, 153, 154

15. नारायण, मन्ना, गाँधीवादी संयोजन के सिद्वान्त, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1961, पृ 78,-80

Corresponding Author

Dr. Ashok Kumar Mahala*

Assistant Professor, Political Science, Govt. Arts College, Sikar